श्री हेमन्त सोरेन
माननीय मुख्यमंत्री,
झारखण्ड

फूलो झानो आशीर्वाद अभियान

बदलाव की प्रेरक कहानियाँ...

फूलो झानो आशीर्वाद अभियान

उद्देश्य – राज्य में हड़िया-दारु के निर्माण एवं बिक्री से जुड़ी ग्रामीण महिलाओं को सम्मानजनक आजीविका के वैकल्पिक साधन उपलब्ध कराकर मुख्यधारा में जोड़ने का एक प्रयास है 'फूलो झानो आशीर्वाद अभियान''। इस अभियान के तहत चिन्हित ग्रामीण महिलाओं का काउंसेलिंग कर इच्छानुसार वैकल्पिक आजीविका के साधनों से जोड़ने का प्रावधान है।

"हड़िया-दारू बिक्री के कार्यो से मजबूरीवश जुड़ी महिलाओं की मदद की जाएगी। हमारी सरकार ने ये संकल्प लिया है कि आदिवासी समाज के लिए अभिशाप दारू-हड़िया की बिक्री से जुड़ी बहनों को आजीविका के सशक्त साधनों से जोड़ा जाएगा ताकि उनके जीवन में बदलाव आए"

– **हेमन्त सोरेन**, माननीय मुख्यमंत्री, झारखण्ड

फूलो झानो आशीर्वाद अभियान : एक अभिनव पहल

- माननीय मुख्यमंत्री श्री हेमन्त सोरेन की पहल पर राज्य में हड़िया दारू निर्माण एवं बिक्री से जुड़ी महिलाओं को सम्मानजनक आजीविका उपलब्ध कराने हेतु ग्रामीण विकास विभाग द्वारा सर्वेक्षण किया गया।
- सर्वेक्षण के जरिए महिलाओं की सामाजिक- आर्थिक स्थिति एवं हड़िया-दारू बिक्री से जुड़ाव एवं इससे होने वाली आमदनी की जानकारी प्राप्त की गई।
- हड़िया-दारू बिक्री से जुड़ी ग्रामीण महिलाओं की पहचान के लिए ग्रामीण विकास विभाग अंतर्गत जेएसएलपीएस की सखी मंडल की बहनों द्वारा सर्वेक्षण किया गया जिसके अंतर्गत 15,456 महिलाओं की पहचान सुनिश्चित हुई।
- चिन्हित महिलाओं को सम्मानजनक आजीविका के साधनों से जोड़ने हेतु फूलो झानो आशीर्वाद अभियान का शुभारंभ माननीय मुख्यमंत्री के द्वारा 29 सितंबर 2020 को किया गया। जिसके क्रियान्वयन की जिम्मेदारी ग्रामीण विकास विभाग अतर्गत झारखंड स्टेट लाइवलीहुड प्रमोशन सोसाईटी को सौपी गई।
- चिन्हित महिलाओं को सखी मंडल से जोड़ने हेतु विशेष ड्राइव चलाया गया एवं 10 हजार रूपये का ब्याजमुक्त लोन उपलब्ध कराया गया। इसके अतिरिक्त राशि सामान्य दर पर उपलब्ध कराई जा रही है।
- इच्छानुसार वैकल्पिक स्वरोजगार से जुड़ने का अवसर एवं तकनीकी मदद चिन्हित महिलाओं को उपलब्ध कराया जा रहा है।
- करीब 13,456 चिन्हित महिलाओं को काउंसेलिंग कर हड़िया-दारू निर्माण एवं बिक्री के कार्य से मुक्त कराकर आजीविका के विभिन्न साधनों से जोड़ा गया है। इसमें से कई महिलाओं को सामुदायिक कैडर के रूप में भी चुना गया है जो अन्य दीदियों को भी हड़िया दारू बिक्री के कार्यों से अलग होने के लिए प्रेरित कर रही है।
- इस कार्य को छोड़ चुकी महिलाओं का सूक्ष्म उद्यम, कृषि आधारित आजीविका, वनोपज संग्रहण, पशुपालन, मछलीपालन एवं अन्य सम्मानजनक आजीविका के साधनों से जोड़ा गया है।

खूँटी

अनिमा

गांव – छाता
प्रखण्ड – कर्रा
जिला – खूँटी
सखी मंडल – तारा आजीविका सखी मंडल

> *फूलो झानो अभियान ने मुझे मेरे हक का सम्मान दिलाया है। अब लोग मुझे बैंक दीदी बुलाते हैं और पूरे पंचायत में मुझे एक अलग पहचान मिली है*

बदलती भूमिका ने बढ़ाया अनिमा का मान, गाँव के लोग अब कर रहे सम्मान

मैं अब हडिया नहीं बेचती, मेरी पहचान दारुवाली के रूप में थी। अपने ही गाँव के लोग मुझे हीन भावना और गन्दी नज़र से देखा करते थे। फूलो झानो अभियान ने मुझे मेरे हक का सम्मान दिलाया है। अब लोग मुझे बैंक दीदी बुलाते हैं और पूरे पंचायत में मुझे एक अलग पहचान मिली है"

खूटी की अनिमा हेरेंज आंखो में आत्मविश्वास के साथ अपने बदलाव की कह. ानी बयां करती है। अनिमा कर्रा प्रखंड के छाता गाँवकी रहने वाली हैं,वो अपने जीवनयापन के लिए हाट–बाज़ार में दारु बना कर बेचने के काम किया करती थीं। अनिमा के ऊपर अपने बूढ़ी सास, बेरोजगार पति और 6 साल की बेटी के लालन–पालन का दायित्व है। पूंजी के अभाव और घर चलाने की चुनौती के मद्देनज़र वह ना चाहते हुए भी हड़िया बनाने और बेचने का काम कर रही थीं, अपने घर में सबसे ज्यादा पढ़ी–लिखीं होने के बावजूद अवसरों के अभाव में अपनी शिक्षा का सही उपयोग नहीं कर पा रहे थीं।

फूलो झानो आशीर्वाद अभियान के तहत अनिमा को 10 हज़ार रुपए की सहायता राशि प्राप्त हुई। अनिमा को इस राशि के लिए अलग से किसी भी प्रकार का ब्याज देने की आवश्यकता नहीं थी। अनिमा ने प्राप्त राशि और अपने जमा पूंजी की मदद से 9 हज़ार का बड़ा फ़ोन (स्मार्ट फ़ोन) और मंत्रा यंत्र की खरीददारी की। उन्हें डिजी पे के लिए प्वाइंट आवंटित किया गया साथ ही लेन–देन करने की तकनीकी जानकारी के विषय में प्रशिक्षित भी किया गया। अनिमा पढ़ी–लिखी थीं, इस वजह से वह कुछ दिनों में ही बैंक के तर्ज़ पर जमा निकासी करने लगीं. कुछ ही महीनों में अनिमा ने अपना दायरा बढाया और अपने पंचायत के सभी गावों में लेन–देन करने लगीं। छाता गाँव के 10 किलोमीटर के परिसीमा में कोई भी बैंक शाखा नहीं है। लोगों को गाँव से बैंक आवागमन में घंटों लग जाते थे और कच्ची सड़क की वजह से परेशानियां भी बहुत होती थी, दूरस्त होने की वजह से आवागमन के लिए साधन भी मुश्किल से मिल पाता था। ऐसे में दीदी डोर–स्टेप बैंकिंग सुविधा देने का काम शुरू की और 20 से 25 हज़ार रुपए का रोजाना दिन का लेन–देन करने लगीं. उनके इस प्रयास से उनकी रोजाना की आमदनी 200 से 250 रुपए की होने लगी।

अनिमा को छाता पंचायत के लिए बैंक ऑफ़ इंडिया के तहत बीसी पॉइंट भी आवंटित हो गया है। सितम्बर माह, 2021 से अनिमा अपने घर पर से ही मिनी बैंक का संचालन कर रही हैं. आवश्यकता के अनुसार दीदी अब खाता खोलना, जमा–निकासी, बीमा करना, समूह का लेन–देन करने में समर्थ हो गयी हैं.

बोकारो

अंजू देवी

ग्राम – बंगा

पंचायत – उत्तासारा

प्रखंड – पेटरवार

समूह का नाम – अम्बे महिला मंडल

> *“फूलो झानो आशीर्वाद अभियान वरदान के समान है वरना हमें यूं ही बाजार के कोने में लोगों को दारू–हड़िया पिलाने का काम जीवन भर करना पड़ता। जिस बाजार में कभी छुपकर हड़िया बेचने का काम करना पड़ता था आज उसी बाजार में मेरा एक होटल है और अच्छी आमदनी कर पा रही हूँ”*

सरकार की पहल से संवरती जिंदगी

बोकारो जिला के बंगा ग्राम की अंजू देवी बताती है कि "हम हड़िया बेचने वाली महिलाओं के लिए फूलो झानो आशीर्वाद अभियान वरदान के समान है वरना हमें यूं ही बाजार के कोने में लोगों को दारू–हड़िया पिलाने का काम जीवन भर करना पड़ता। जिस बाजार में कभी छुपकर हड़िया बेचने का काम करना पड़ता था आज उसी बाजार में मेरा एक होटल है और अच्छी आमदनी कर पा रही हूँ।

अंजू देवी पिछले 2 वर्षों से हड़िया बनाने और बेचने का काम करती थी। बड़े–छोटे बाजारों में लोगों को हड़िया पिलाना जैसे इनके जीवन का हिस्सा बन गया था। अंजू ने भी इसी को अपनी तकदीर मान लिया था, पैसे तो आते थे लेकिन समाज में इज्जत नहीं के बराबर था।

लोगों को शराब पी कर झगड़ते, गाली–गलौज करते देख अंजू को भी अपने बच्चों के भविष्य की चिंता होती थी, अपने बच्चों को इस माहौल से दूर रखना चाहती थी। लेकिन हड़िया बेचने में होने वाली कमाई की वजह से ही अंजू का घर का खर्च चलता था। इस पेशे से जुड़ी होने के वजह से बच्चों को ऐसे माहौल से दूर रख पाना मुश्किल था।

ऐसे समय में झारखंड सरकार की' फूलो झानो आशीर्वाद अभियान' के जरिए ग्रामीण महिलाओं को हड़िया दारू निर्माण एवं बिक्री कार्यों से मुक्त कर सम्मानजनक आजीविका से जोड़ने की पहल के बारे में अंजू को पता चला। इस अभियान के तहत सम्मानजनक आजीविका से साधन से जुडने हेतु 10,000 रु की आर्थिक सहायता भी मिल रही है। फिर क्या था अंजू ने भी मजबूरी के इस कार्य से मुक्ती की सोची और उसने फूलो झानो आशीर्वाद अभियान से मिली राशि से अपने गाँव में एक होटल खोला और लोगों को चाय–नाश्ता बेचने लगी। धीरे–धीरे आमदनी और व्यापार दोनों बढ़ने लगा, अंजू ने फिर कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा और अपने सखी मंडल से दोबारा 20,000 का ऋण क्रेडिट लिंकेज के जरिए लेकर होटल का विस्तार किया है। अब अंजू होटल में ही राशन के सामानों की बिक्री कर प्रति माह 8 से 9 हजार की आमदनी कर रहीं है।

अंजू को अब गाँव के लोग भी इज्जत देने लगे है, आमदनी बढ़ी तो बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलाने मे भी सक्षम हुई।

लातेहार

कौशल्या देवी
गाँव – जान्हो
प्रखण्ड –मनिका
जिला – लातेहार

> *"पहले तो काम नहीं मिलता था, अब गांव में मुझे सब पहचानते हैं और दूसरी महिलाएं मुझ जैसी बनना चाहती है। मुझे ये सम्मान मिला है फूलो झानो आशीर्वाद अभियान की मदद से"*

हड़िया-दारू के व्यवसाय से कौशल्या को मिली मुक्ति

लातेहार के मनिका प्रखंड की कौशल्या देवी जान्हो गाँव की रहने वाली हैं। नियमित आमदनी नहीं होने के कारण कौशल्या अपने परिवार के साथ काफी गरीबी में जीवन बिता रहीं थी। परिवार चलाने के लिए कौशल्या मजदूरी करती थी पर काम हमेशा नहीं मिलता था। एक एकड़ जमीन होने के बावजूद, जानकारी और कृषि उपकरणों की कमी के कारण खेती भी नहीं के बराबर करती थी। ऐसे में कौशल्या देवी को हड़िया–दारू बेचना आसान लगा और वह स्थानीय बाजार में हड़िया–दारू बेचकर आजीविका चलाती थी।

करीब चार साल से सखी मंडल से जुड़ी कौशल्या की कमाई का जरिए हड़िया निर्माण एवं बिक्री ही था। साल 2020 में कौशल्या के पति लकवाग्रस्त हो गए। कौशल्या की जिंदगी जैसे थम सी गई थी। कौशल्या कहीं न कहीं अपने पति की बीमारी के लिए हडिया–दारू बेचने को ही जिम्मेदार मानती थी, उसे लगता था बुरे काम का बुरा नतीजा। ऐसे ही समय में कौशल्या को फूलो झानो आशीर्वाद अभियान की जानकारी मिली और कौशल्या ने हड़िया–दारू बेचने का काम छोड़ने का निश्चय किया। फिर क्या था अपनी पुरानी कमाई और सखी मंडल से ब्याजमुक्त कर्ज लेकर खेती करना शुरू किया।

आज वह जोहार परियोजना के तहत वरिष्ठ एवीएम (आजीविका वनोपज मित्र) के रूप में भी काम कर रहीं हैं।

जून 2021 में उन्होंने 50,000 रुपये का ऋण लेकर मदर यूनिट खोला। अब वर्तमान में उसे इससे 20,000 रुपये प्रतिमाह का लाभ हो रहा है। हाल ही में उन्होंने 5000 रुपये के निवेश से 50 डेसीमल भूमि में लेमन ग्रास लगाया है। कौशल्या कहती है कि "पहले तो काम नहीं मिलता था, अब गांव में मुझे सब पहचानते हैं और दूसरी महिलाएं मुझ जैसी बनना चाहती है। मुझे ये सम्मान मिला है फूलो झानो आशीर्वाद अभियान की मदद से"। कौशल्या बताती है कि अब तक अपने गांव की 10 महिलाओं को शराब बेचने और अन्य व्यवसाय करने के लिए प्रेरित कर चुकी हैं।

तारा गोप
गाँव – दिरिबुरु – पंडरासाली
प्रखण्ड – नोआमुंडी
जिला – पश्चिम सिंहभूम
सखी मंडल – माँ शेरावाली
आजीविका स्वयं सहायता समूह

> *आज मैं हड़िया बिक्री निर्माण कार्यों को अलविदा कह चुकी हूं, मेरी दुकान से मुझे अच्छी कमाई हो जाती है। मैं समय पर अपने समूह को पैसे भी वापस कर पा रही हूं और मेरा परिवार अब सम्मानजनक जीवन जी रहा है।*

सखी मंडल के साथ से बदली जिंदगी

पश्चिम सिंहभूम जिला के नोआमुंडी प्रखण्ड के दिरिबुरु – पंडरासाली पंचायत की तारा गोप हड़िया बेचकर अपने परिवार का आर्थिक सहयोग करती थी। तारा बताती हैं कि उनके पति भी काम करते हैं लेकिन घर कि ज़रूरत उनकी कमाई से पूरी नहीं हो पाती थी। अपने घर परिवार को दो वक्त की रोटी मिल सके इसके लिए वो हड़िया–दारू निर्माण के कार्य से जुड़ी। दारू–हड़िया बेचते वक़्त उन्हे कई तरह की दिक्कतों का सामना करना पड़ता था। लेकिन मजबूरी जो न कराए। कभी कभी लोग शराब पीकर लड़ाई करते थे जिससे तारा काफी असहज भी महसूस करती थी।

माँ शेरावाली स्वयं सहायता समूह की सदस्य तारा गोप, समूह से जुड़कर कभी कोई ऋण नहीं ली थी। तारा बताती है कि हड़िया की बिक्री से कमाई तो ठीक हो ती थी लेकिन समाज में प्रतिष्ठा नहीं थी। वो बताती है कि समूह की बैठक के दौरान एक दिन मुझे फूलो झानो आशीर्वाद अभियान के बारे में बताया गया एवं मुझे इस अभियान के लाभुक के रुप में चुना गया। उसके जीवन ने यहीं से करवट ली, समूह से 15 हज़ार रुपये का ऋण लेकर तारा ने एक छोटा सा नाश्ता दुकान शुरू किया। साथ ही उन्होने मुर्गी पालन और बकरी पालन भी शुरू किया। खनन क्षेत्र मे नाश्ता दुकान खोलने से दिन भर मे 1000–1200 की बिक्री हो जाती है। साथ ही मुर्गी पालन और बकरी पालन से तारा गोप को महीने मे 3–4 हज़ार रुपये की कमाई हो जाती है। तारा बताती हैं कि वह 3 साल से समूह जुड़ी है, लेकिन उन्होने कभी ऋण नहीं लिया।

तारा कहती है कि आज मैं हड़िया बिक्री निर्माण कार्यों को अलविदा कह चुकी हूं, मेरी दुकान से मुझे अच्छी कमाई हो जाती है। मैं समय पर अपने समूह को पैसे भी वापस कर पा रही हूँ और मेरा परिवार अब सम्मानजनक जीवन जी रहा है।

राँची

हुलास देवी
गाँव – बालालोंग
प्रखण्ड – नगड़ी
जिला – रांची
समूह – सुहानी महिला समिति

> *"कभी अपने काम के वजह से ताना झेलने वाली हुलास, फूलो झानो आशीर्वाद अभियान से जुड़कर एक सम्मानजनक जीवन व्यतीत कर रही हैं।"*

उद्यमिता की मिसाल बनी हुलास देवी

रांची के नगड़ी प्रखण्ड के बालालोंग गाँव की हुलास देवी अपने घर की कमजोर आर्थिक स्थिति के कारण हड़िया–दारू बेचने का काम करती थी। वह बताती हैं," दारू बनाने का काम मुझे अच्छा नहीं लगता था। लेकिन घर की जरूरतों को देखकर करना पड़ता था। परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी। परिस्थिति इतनी खराब थी कि दो वक़्त की रोटी की भी व्यवस्था कर पाना मुश्किल था। रोजी–रोटी के लिए मजबूरन मुझे हड़िया–दारू बेचना पड़ रहा था।"

सुहानी महिला समिति की सदस्य हुलास, वर्ष 2016 मे समूह से जुड़ीं। घर की कमजोर आर्थिक स्थिति के कारण वह हड़िया–दारू बेचती थी जिससे दो वक़्त की रोटी नसीब हो सके। साल 2020 मे फूलो झानो आशीर्वाद अभियान की शुरूआत की गई, जिससे उन्हे हड़िया–दारू बेचने के काम से मुक्त होकर दूसरे व्यवसाय से जुड़ने के लिए ब्याज मुक्त ऋण और सहयोग के बारे मे पता चला। बस फिर क्या था, हुलास ने कभी पीछे मुड़ कर नहीं देखा। उन्होने समूह से ऋण लेकर 40 बत्तख खरीदा और बतख और अंडे बेचने का काम शुरू किया। जिससे 6 हज़ार रुपये का मुनाफा हुआ। इस सफलता से प्रेरित होकर उन्होने एक चिकन दुकान शुरू किया, जिससे उन्हे दिन भर मे उन्हे 500 रुपये तक की कमाई हो जाती हैं। आगे वह अपने काम को और बढ़ाना चाहती हैं। वह और ऋण लेकर मछ्ली से संबन्धित व्यवसाय शुरू करने का इरादा रखती हैं। उनको बढ़ते हुए हौसले को देख कर उनके परिवार वाले भी उनका सहयोग कर रहे हैं। कभी अपने काम के वजह से ताना झेलने वाली हुलास, फूलो झानो आशीर्वाद अभियान से जुड़कर एक सम्मानजनक जीवन व्यतीत कर रही हैं। आज हुलास अपने गाँव की दूसरी महिलाओं के लिए मिसाल बन गयी हैं और लोगों को अपने काम द्वारा प्रभावित कर रही हैं।

जामताड़ा

जिया मुनि मुर्मू
गाँव – सुगनीबासा
प्रखण्ड – फतेहपुर
जिला – जामताड़ा
सखी मंडल – जोहार मरांग बुरू आजीविका सखी मंडल

> *"फूलो झानो आशीर्वाद अभियान एवं इसके जरिए मिली सुविधाओं ने हमें हड़िया दारू बिक्री से आजाद होने का हौसला दिया। सरकार अगर यह अभियान नहीं शुरू करती तो मुझ जैसी हजारों महिलाएं जीवन भर इस असम्मान भरे काम को करते रहते और खुद को कोसते रहते"*

सशक्तिकरण की मिसाल बनी जिया मुर्मू

जामताड़ा के फतेहपुर प्रखंड के सुगनीबासा गांव की रहने वाली जिया मुनि मुर्मू वर्ष 2017 से जोहार मरांग बुरु आजीविका सखी मंडल से जुड़ी हुई हैं। जिया जो कि पहले दारू हड़िया बेचने का काम करती थीं पिछले वर्ष से खेती को आमदनी का मुख्य साधन बना कर अपने गांव में महिला सशक्तिकरण की मिसाल कायम करने में सफल हुई हैं।

जिया मुनि बताती हैं कि इनकी 6 बेटियां हैं। इनके घर की आर्थिक परिस्थितियां इतनी खराब थीं कि इनकी एक बेटी की मौत इलाज के लिए वक़्त पर पैसा ना रहने की वजह से हो गयी। इन्होंने 1 साल पहले खेती बाड़ी के पैसों की बदौलत अपनी छोटी बेटी की शादी कर पाई। आज इनकी सभी बेटियों की शादी हो गई है।

जिया मुर्मू आगे कहती हैं कि,"पहले घर में शराब बनाकर हाट बाज़ार में बेचा करती थी, इससे बहुत परेशानी होती थी। घर के पुरुष बहुत ज्यादा शराब पीने लगे थें, घर में लड़ाई होती थी और इस कारण से पैसा भी नहीं बचता था। इसलिए मैंने सखी मंडल के मदद से शराब बनाने का काम छोड़कर खेती का काम शुरू किया।"

जिया ने समूह से ऋण लेकर अपने ही खेत में सब्जी की खेती करना शुरू किया जिससे जहां एक ओर कमाई बढ़ी वहीं दूसरी ओर पति का शराब पीना भी कम हुआ। इससे परिवार की स्थिति मे काफी सुधार आया।

जिया मुख्य रूप से धान, कद्दू, टमाटर, बरबट्टी, करेला आदि का उत्पादन कर घर खर्च के बाद करीब 40,000 की बचत प्रतिवर्ष कर रही हैं। इस काम की शुरुआत के लिए जिया मुनि ने समूह से करीब ₹10000 का ब्याज मुक्त ऋण मिला और आज वह ससमय ऋण वापसी भी कर रही हैं।

जिया मुर्मू आमदनी के बारे में जानकारी देते हुए कहती हैं कि अब जितना कमाते हैं उससे खाने और जरूरतों के लिए खर्च करके भी आसानी से प्रतिवर्ष करीब ₹40,000 लगभग बच जाता है। जिसके मदद से मेरा परिवार एक सम्मानजनक जीवन जी रहा है।

जिया बताती है कि "फूलो झानो आशीर्वाद अभियान एवं इसके जरिए मिली सुविधाओं ने हमें हड़िया दारू बिक्री से आजाद होने का हौसला दिया। सरकार अगर यह अभियान नहीं शुरू करती तो मुझ जैसी हजारों महिलाएं जीवन भर इस असम्मान भरे काम को करते रहते और खुद को कोसते रहते।"

रामगढ़

मंजू देवी
गाँव – तोयर
पंचायत – हूपू
प्रखंड – गोला
जिला – रामगढ
समूह का नाम – शक्ति महिला आजीविका सखी मंडल

> ***"गाँव के कई लोगों को दारू–हड़िया का काम विरासत में मिला था, लेकिन हमें इसे मजबूरी में शुरू करना पड़ा। हम कभी नहीं चाहते है कि हमारे बच्चों को यह काम करना पड़े। अब हमने 'फूलो झानो आशीर्वाद अभियान' से जुड़कर हड़िया बनाने एवं बेचने का काम छोड़ दिया है और गाँव के लोगों को भी इसके दुष्प्रभाव से अवगत करा रही हूँ"***

सफल उद्यमी के रूप में मंजू को मिली पहचान

रामगढ़ के गोला के तोयर गांव की रहने वाली मंजू देवी हड़िया–दारू निर्माण एवं बिक्री कार्यों से जुड़ी थी। कमाई के अवसर नहीं होने की वजह से मंजू एवं उसके पति ने मिलकर हड़िया दारू बिक्री का कार्य शुरू किया। इस कार्य से आमदनी तो अच्छी होने लगी लेकिन बच्चों के परवरिश एवं समाज में मान–सम्मान को बनाए रखना मुश्किल होने लगा। खेती बाड़ी में कमाई कम होने की वजह से इस काम को शुरू करने वाली मंजू बताती है कि रोजाना 300 रुपये की कमाई अलग से हो जाती थी। आर्थिक जरुरतों की वजह से वह हड़िया बिक्री के कार्यों से अलग नहीं हो पा रही थी।

ऐसे कठिन समय में समूह की बैठक में मंजू को फूलो झानो आशीर्वाद अभियान के बारे में पता चला। मंजू की खुशी का ठिकाना न रहा कि सरकार ने एक ऐसा अभियान शुरू किया है जिससे अब उसे इस कार्य से मुक्ति मिल सकेगी और सम्मानजनक आय के वैकल्पिक आजीविका से जोड़ने में मदद भी की जाएगी। मंजू ने अभियान से जुड़कर 10 हजार रुपए कर्ज लेकर राशन दुकान की शुरूआत की। कुछ महीनों के पश्चात अतिरिक्त कर्ज लेकर मंजू ने चाय–नाश्ता का होटल भी खोला। अपने व्यवसाय में मेहनत से जुटी मंजू आज अच्छी कमाई कर रही है। राशन दुकान से एक ओर जहां रोजाना 200 से 250 की कमाई हो जाती है वहीं होटल से करीब 11 हजार महीने की कमाई होती है। मंजू आज फूलो झानो आशीर्वाद अभियान की बदौलत एक सफल उद्यमी के रुप में स्थापित हो चुकी है।

मंजु देवी बताती है कि "गाँव के कई लोगों को दारू–हड़िया का काम विरासत में मिला था, लेकिन हमें इसे मजबूरी में शुरू करना पड़ा। हम कभी नहीं चाहते है कि हमारे बच्चों को यह काम करना पड़े। अब हमने 'फूलो झानो आशीर्वाद अभियान' से जुड़कर हड़िया बनाने एवं बेचने का काम छोड़ दिया है और गाँव के लोगों को भी इसके दुष्प्रभाव से अवगत करा रही हूँ"।

दुमका

संगीता सोरेन

गाँव – आमझरी

जिला – दुमका

मैं अपने गांव एवं आस–पास की दीदियों को हड़िया बिक्री के कार्यों से दूर रहने के लिए प्रेरित करती हूं एवं उनका काउंसेलिंग भी करती हूं कि कैसे हड़िया दारू बिक्री कार्यों से हमारा समाज बर्बाद हो रहा है एवं नशा को बढ़ावा मिल रहा है।

ग्रामीण महिलाओं के लिए मिसाल बनी संगीता सोरेन

दुमका के काठीकुंड के आमझरी गांव की रहने वाली संगीता सोरेन साल 2018 में सखी मंडल से जुड़ी। हड़िया दारू बिक्री एवं निर्माण कार्य ही घर की आमदनी का मुख्य स्रोत था। सखी मंडल से जुड़कर भी संगीता सोरेन के जीवन में कुछ नया नहीं हो पा रहा था। उनकी कमाई का नया जरिया नहीं था, हड़िया दारू बिक्री से ही घर का भरण पोषण चल रहा था। कई बार तो दो वक्त की रोटी भी सखी मंडल के लोन के जरिए ही पूरा हो पाता था।

संगीता सोरेन ने तमाम विकट परिस्थितियों में भी हार नहीं माना। समूह से फूलो झानो आशीर्वाद अभियान से जुड़कर 10 हजार की राशि ब्याजमुक्त लोन के रुप में लेकर एक किराना दुकान की शुरूआत की। धीरे धीरे समूह के क्रेडिट लिंकेज एवं सीआईएफ की राशि से लोन लेकर अपने दुकान का विस्तार किया। मेहनत अब जाकर रंग लाई है और संगीता आज करीब 1000 रुपये रोजाना की आमदनी करती है। अपने कार्यों के जरिए अपने गांव एवं आस–पास के गांवों में उनकी सफल उद्यमी के रुप में पहचान है। संगीता सोरेन अब कभी हड़िया दारू बिक्री के कार्य से नहीं जुड़ना चाहती है।

वो बताती है कि मैं अपनी नई पहचान से बहुत खुश हूं और मेरे घर की आर्थिक स्थिति में भी सुधार हुआ है और मैं बहुत जल्द गांव में कम्प्युटर सेंटर खोलने की भी योजना पर काम कर रही हूं।

संगीता सोरेन आगे बताती है कि मैं अपने गांव एवं आस–पास की दीदियों को हड़िया बिक्री के कार्यों से दूर रहने के लिए प्रेरित करती हूं एवं उनका काउंसेलिंग भी करती हूं कि कैसे हड़िया दारू बिक्री कार्यों से हमारा समाज बर्बाद हो रहा है एवं नशा को बढ़ावा मिल रहा है।

देवघर

रूपा देवी
गाँव – कोलगी गाँव
प्रखण्ड – पालाजोरी
जिला – देवघर
समूह – दुर्गा आजीविका सखी मंडल

"*फूलो झानो आशीर्वाद अभियान के द्वारा ही मेरे जीवन में बदलाव आया और मैं हड़िया दारू बिकी के अलावा किसी काम के बारे में सोच सकी। मुझे ब्याजमुक्त कर्ज नहीं मिलता तो आज मैं अपने जन सेवा केन्द्र को नहल शुरू कर पाती*"

फूलो झानो आशीर्वाद अभियान से संवरती जिंदगी

झारखण्ड के संथाल परगना के देवघर जिला की रूपा देवी अपने गाँव में बदलाव की एक किरण बनी है। रूपा देवी पीवीटीजी समुदाय से हैं, जिससे उनका परिवार पिछड़ा है और गरीबी से जूझ रहा है। रुपा उड़ान परियोजना के तहत दुर्गा आजी.विका सखी मंडल से जुड़ीं। वह आजीविका के लिए हड़िया–दारू बेचने का काम करती थी। परिवार की आर्थिक तंगी के कारण वह बहुत मुश्किल से दो वक़्त की रोटी जुटापाती थी।

समूह के माध्यम से उन्हे फूलो झानो आशीर्वाद अभियान के बारे पता चला। पढे लिखे होने की वजह से पीवीटीजी समुदाय के तहत चल रहे उड़ान परियोजना के लिए उन्होने फूलो झानो आशीर्वाद अभियान के अंतर्गत 10 हज़ार रुपये का ऋण लेकर आजीविका जन सेवा केंद्र शुरू किया। इस संसाधन केंद्र मे वह पीवीटीजी समुदाय को पैन कार्ड, आधार कार्ड, मोबाइल रिचार्ज, रेल या बस टिकट इत्यादि जैसी सुविधाएं प्रदान करती हैं। इस केंद्र के संचालन से लोगों को प्रखण्ड कार्यालय तक जाने की आवश्यकता नहीं पड़ती, जो गाँव से दूर है। इस आजीविका जन सेवा केंद्र से महीने मे 5 हज़ार रुपये तक की आमदनी हो जाती है। अब उनके आर्थिक स्थिति मे सुधार आया है और खुशहाल जीवन व्यतीत कर रही हैं। रुपा देवी आज अपने समुदाय समेत पूरे गांव की महिलाओं के लिए मिसाल है। वह जन सेवा केंद्र चलाकर एक ओर जहां लोगों को डिजीटल सेवाएं घर बैठे उपलब्ध करा रही है वहीं अच्छी कमाई कर अपने परिवार का खर्च भी उठा रही है।

रुपा बताती है कि फूलो झानो आशीर्वाद अभियान के द्वारा ही मेरे जीवन में बदलाव आया और मैं हड़िया दारू बिक्री के अलावा किसी काम के बारे में सोच सकी। मुझे ब्याजमुक्त कर्ज नहीं मिलता तो आज मैं अपने जन सेवा केन्द्र को नहीं शुरू कर पाती।"

पूर्वी सिंहभूम

संगीता दास

गाँव – तुमांडुंगरी

प्रखण्ड – घाटशिला,

जिला – पूर्वी सिंहभूम

सखी मंडल – माँ दुर्गा सखी मंडल

वर्ष 2020 मे फूलो – झानो आशीर्वाद अभियान की शुरुआत होने पर संगीता को उम्मीदों की रौशनी दिखी

फूलो–झानो आशीर्वाद अभियान से बदली जिंदगी

परिवार की आर्थिक तंगी, पति की बेरोजगारी और अपने दो बच्चों का भरण–पोषण करने के लिए संगीता दास को मजबूरन दारू–हड़िया के निर्माण व बिक्री के कार्य से जुड़ना पड़ा। वर्ष 2017 मे जब वह माँ दुर्गा सखी मंडल से जुड़ीं तो उन्हे हर बैठक मे महिलाओं के तानों का सामना करना पड़ता था। उन्हें आजीविका के साधन न होने के कारण संगीता के पास कोई और रास्ता न था। वर्ष 2020 मे फूलो झानो आशीर्वाद अभियान की शुरुआत होने पर संगीता को उम्मीदों की रौशनी दिखी। उनकी समूह की महिलाओं ने उन्हें आजीविका के सम्मानजनक साधनों से जुडने के लिए प्रेरित किया। उनसे प्रोत्साहित होकर उन्होंने हड़िया–दारू बेचने का काम छोड़ने का निर्णय लिया और समूह से 10 हज़ार रुपये का ब्याजमुक्त ऋण लेकर अपने घर में एक किराना दुकान शुरू किया। उससे अच्छी कमाई होने लगी तो उन्होंने अपने पति को सब्जी बेचने के व्यापार से जोड़ दिया। जहां पहले हड़िया–दारू की बिक्री से मुश्किल से घर का खर्च चल पाता था, वहीं आज संगीता सम्मानपूर्वक हर महीने 9–10 हज़ार रुपये की आमदनी कमा रही हैं।

अपने जीवन मे आए बदलाव के बारे मे बताते हुए संगीता कहती हैं, "पहले महिलाओं के तानों के चलते बैठक मे जाने से और गाँव–घर मे आसपास जाने मे भी कतराती थी। दारू–हड़िया की बिक्री से किसी तरह घर का खर्च चलता था। पति भी बेरोजगार थे, हड़िया –दारू पीते थे, जिससे घर मे अशांति का माहौल रहता था। फूलो झानो आशीर्वाद अभियान से मेरे जीवन मे बदलाव आया है। अब मैं अपने गाँव मे सम्मानपूर्वक जीवन व्यतीत कर रही हैं, साथ ही अपने परिवार का खर्च भी अच्छी तरह चला पा रही हूँ। इस पहल और सखी मंडल के प्रयास से नयी शुरुआत करने का मौका मिला है।"

लोहरदगा

कमला देवी
गाँव – दरोटोली
प्रखण्ड – कुडू
जिला – लोहरदगा
सखी मंडल – लक्ष्मी महिला सखी मंडल

> *मैं अन्य महिलाओं को ऋण लेने के लिए प्रेरित करती हूँ और ऋण लेने से नहीं डरने के लिए समझाती हूं। मैं भविष्य में अपने कारोबार का विस्तार करना चाहती हूँ*

ब्याज मुक्त ऋण से मिला सम्मानजनक आजीविका का तोहफा

35 वर्षीय कमला देवी लोहरदगा जिले के कूडू प्रखंड के दरोटोली गांव की रहने वाली हैं। कमला चार बच्चों की मां हैं, उनके पति हरिंदर मुंडा कुछ नहीं करते और शराब के आदि हैं। घर चलाने के लिए कमला हडिया–दारु बेचती थी।

कमला वर्ष 2013 में लक्ष्मी महिला मंडल की सदस्य बनीं। उन्होंने अपनी घरेलू जरूरतों के लिए अपने समूह से ऋण लेना शुरू किया। कमला ने बताया, "मैंने अपने बच्चों की शिक्षा के लिए किस्तों में 50,000 रुपये का ऋण लिया है, मैंने जमीन खरीदने और अपना घर बनाने के लिए भी ऋण लिया, जो कि लगभग 1 लाख 80 हजार तक है, उन्हें भी मैंने किश्तों में लिया।"

कमला हडिया–दारु बेचने के अलावा बांस–शिल्प का भी काम करती हैं। वह हडिया–दारु की बिक्री से होने वाली कमाई से प्रभावित थी जिसकी वजह से वह इस कार्य को नहीं छोड़ पा रही थी। ऐसे में फूलो झानो आशीर्वाद अभियान उनके लिए वरदान बनकर आया। इस अभियान के जरिए कमला को काउंसेलिंग एवं तकनीकी मदद मिला, जिसके तहत ब्याज–मुक्त ऋण लेकर कमला ने किराने की दुकान शुरू की।

कमला बताती हैं कि,"मैं 4 साल से हडिया–दारू बेच रही थी और रोजाना करीब 200 रुपये कमा लेती थी। लेकिन इससे मेरे घर का माहौल खराब हो गया था, नशे में लोग मेरे घर के सामने घूमते रहते थे, बच्चे मेरे बड़े हो गए है जिससे मुझे डर लगता था। लेकिन अब जब मैंने यह काम छोड़ा, तो मैंने अपनी किराने की दुकान से 700 रुपये साप्ताहिक, बांस शिल्प से लगभग 1000–1500 रुपये महीना में कमा लेती हूं। वहीं सखी मंडल से जुड़कर मैं एक ब्लॉक रिसोर्स पर्सन के रूप में भी काम कर रही हूँ, जिसके माध्यम से मैं महिलाओं को स्वास्थ्य, शिक्षा, आंगनबाडी, पीडीएस और पंचायत व्यवस्था पर जागरूक करती हूँ। मैं जॉब कार्ड, गोल्डन कार्ड बनाने और पेंशन लेने में उनकी मदद करती हूं। मैं इस काम से लगभग 7,500 रुपये कमाती हूँ।"

कमला के जीवन में फूलो झानो आशीर्वाद अभियान से बदलाव ने दस्तक दी। अब वह एक सम्मानजनक जीवन जी रही हैं। अपनी आपबीती बताते हुए कमला कहती है, "मैं इस जीवन में अच्छा महसूस कर रही हूं। मैं अन्य महिलाओं को ऋण लेने के लिए प्रेरित करती हूँ और ऋण लेने से नहीं डरने के लिए समझाती हूं। मैं भविष्य में अपने कारोबार का विस्तार करना चाहती हूं।

गिरिडीह

सुनीता बेसरा
प्रखण्ड – देपरी
जिला – गिरिडीह

"आज मेरी एक सम्मानजनक जिंदगी है एवं समाज में मेरी अपनी पहचान भी है। मैं दूसरों को भी हड़िया बिक्री से दूर रहने की सलाह देती हूं। "

फूलो झानो आशीर्वाद अभियान से मिला समाज में पहचान

गिरिडीह के देवरी प्रखण्ड की सुनीता बेसरा हड़िया बिक्री करके अपने परिवार का भरण पोषण करती थी। 26 साल की सुनीता 2016 में अपनी शादी के बाद घर खर्च पूरा करने के लिए हड़िया दारू निर्माण एवं बिक्री के कार्य से जुड़ी। सखी मंडल से जुड़ने के बाद सुनीता के जीवन में बदलाव तो आया पर हड़िया दारु बिक्री से होने वाली कमाई को दरकिनार न कर सकी।

सुनीता को सखी मंडल के माध्यम से फूलो झानो आशीर्वाद अभियान के बारे में पता चला कि सरकार हड़िया दारु निर्माण एवं बिक्री से जुड़ी ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक उन्नयन एवं आजीविका सशक्तिकरण हेतु प्रयास कर रही है। फिर सुनीता ने फूलो झानो आशीर्वाद अभियान की मदद से 10 हजार रुपये का कर्ज लेकर बकरी पालन एवं लेमन ग्रास की खेती की शुरूआत की। कुछ ही महीनों पश्चात् सुनीता ने एक राशन दुकान भी खोला।

आज सुनीता हड़िया दारू निर्माण एवं बिक्री के मकड़जाल से निकलकर एक सफल उद्यमी के रुप में स्थापित हो चुकी है। सुनीता की मासिक आमदनी करीब 7 से 8 हजार रुपये हो जाती है।

सुनीता बताती है कि"हड़िया दारू बिक्री से जुड़े होने की वजह से मुझे दिन भर कड़ी धूप में बाजार में बैठना पड़ता था, मेर घर एवं बच्चों की जिंदगी भी खराब हो रही थी। वहीं लोग मुझे सम्मान की नजर से नहीं देखते थे। आज मेरी एक सम्मानजनक जिंदगी है एवं समाज में मेरी अपनी पहचान भी है। मैं दूसरों को भी हड़िया बिक्री से दूर रहने की सलाह देती हूं। "

पलामू

प्रेमा देवी
गाँव – बाबुदुम्बी
प्रखण्ड – नीलाम्बर–पिताम्बरपुर
जिला – पलामू

> *अब तक मैंने दुकान में करीब 50 हजार रूपये का निवेश किया है जिससे मेरी आमदनी करीब 15 हजार की हो जाती है। आने वाले समय में इसे और बढ़ाएंगे*

उद्यमिता से सुदृढ़ होती प्रेमा की आजीविका

पलामू जिले के नीलाम्बर–पिताम्बरपुर प्रखंड के अंतर्गत बाबुदुम्बी गाँव की प्रेमा देवी के जीवन में बदलाव की नींव फूलो झानो आशीर्वाद अभियान ने रखी। 32 वर्षीय प्रेमा चमेली सखी मंडल की सदस्य है।

प्रेमा के घर में कुल सात सदस्य हैं, उनके पांच बच्चे हैं – चार लड़की और एक लड़का है। अपने परिवार के जीवन यापन करने के लिए वो पिछले 6 सालों से अपने पति के साथ मिलकर हडिया–दारु बेचती थी, जिससे घर परिवार चलता था। हड़िया बेचने से पैसा तो आता था लेकिन इज्जत नही मिलती थी साथ में कभी–कभी अपने ग्राहक के द्वारा बुरा बर्ताव और गाली भी सुनना पड़ता था।

प्रेमा हडिया–दारु बेचना छोड़ना तो चाहती थी पर अवसर की कमी के चलते नहीं कर पा रहीं थी। इस बीच साल 2020 में प्रेमा को सरकार द्वारा संचालित फूलो झानो आशीर्वाद अभियान के बारे में जानकारी मिली। जिसके तहत हडिया–दारू बेचने वाली ग्रामीण महिलाओं को सम्मानजनक आजीविका से जोड़ने की पहल की गई थी। वहीं हड़िया निर्माण एवं बिक्री कार्य छोड़ने वाले को ब्याज मुक्त 10 हजार रूपये का ऋण समूह से उपलब्ध कराने का प्रावधान था।

अवसर का लाभ लेते हुए प्रेमा ने शराब बनाना छोड़ दिया और समूह से राशि लेकर अपना किराना दुकान खोला। शुरुआत के दो–तीन माह में काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, ग्राहक कम आते थे परन्तु अब एक साल होने को है और प्रेमा अब रोजाना 500 से 600 रूपये की कमाई राशन दुकान से कर रही है।

प्रेमा बताती है, "अब तक मैंने दुकान में करीब 50 हजार रूपये का निवेश किया है जिससे मेरी आमदनी करीब 15 हजार की हो जाती है। आने वाले समय में इसे और बढ़ाएंगे।"

अब प्रेमा देवी दुसरे को भी हड़िया निर्माण एवं बिक्री कार्यों से दूर होने की सलाह देती है और इससे होने वाली हानियों के बारे में भी समझाती है। प्रेमा आज गांव की दूसरी दीदियों के लिए प्रेरणास्रोत के रुप में कार्य करती है।

गढ़वा

शारदा देवी
गाँव – बिरबंधा
जिला – गढ़वा
सखी मंडल – लक्ष्मी सखी मंडल

“ मैं दूसरी महिलाओं को भी फूलो झानो अशीर्वाद अभियान से जुड़ने के लिए प्रोत्साहित करती हूं। ”

बदलाव की ताकत बनी सखी मंडल की दीदियाँ

गढ़वा जिले के बिरबंधा गाँव की रहने वाली 28 वर्षीय शारदा देवी लक्ष्मी सखी मंडल की सदस्य है। समूह में जुड़ने से पहले शारदा की आर्थिक हालत बहुत ख़राब थी। घर चलाने के लिए शारदा न चाहते हुए भी हड़िया दारू बेचने का काम करने लगी। परिवार का भरण पोषण एवं आर्थिक परेशानियों ने शारदा को हड़िया बिक्री के कार्यों से जोड़ दिया।

समूह से जुड़ने के बाद, शारदा के जीवन में काफी बदलाव आया। उन्होंने बचत करना सिखा और समूह से ऋण लेकर अपनी छोटी–छोटी जरूरतों को पूरा किया। शारदा बताती है, "अब छोटी–छोटी चीजों के लिए बड़े–बड़े लोगो के आगे, हाथ नहीं फैलाना पड़ता है क्योकिं समूह मेरे लिए एक मजबूत सहारा है।"

इसी बीच शारदा को हड़िया–दारु बनाने और बेचने के काम से आज़ाद होने का सुनहरा मौका फूलो झानो आशीर्वाद अभियान से मिला। साल 2020 में फूलो झानो आशीर्वाद अभियान के अंतर्गत शारदा ने ब्याजमुक्त दस हजार रूपए के ऋण से बकरी–पालन की शुरुआत की। आज साल–भर से शारदा बकरी–पालन में जुडी हैं, जिससे हर महीने उनकी नियमित आय हो जाती है। शारदा ने न केवल खुद को बदला बल्कि गाँव की अन्य महिलाओं को भी हड़िया–दारु नहीं बेचने के लिए प्रेरित कर रही हैं। शारदा जानती है की एक मजबूत समाज की नींव के लिए हडिया–दारु बनाना और बेचना बंद करना ही होगा।

शारदा बताती है कि "फूलो झानो आशीर्वाद अभियान उनकी जिंदगी में बदलाव का किरण बनकर आया। इस अभियान की वजह से ही उनको हड़िया बिक्री कार्य से अलग होने का मौका मिला और मैं अब सम्मान के साथ अपने जीवन में आगे बढ़ रही हूं। मैं दूसरी महिलाओं को भी फूलो झानो अशीर्वाद अभियान से जुड़ने के लिए प्रोत्साहित करती हूं। "

कोडरमा

सुकरी देवी
गाँव – चंद्रघटी
पंचायत – कांकोन
प्रखंड – चंदवारा
समूह का नाम – गंगा आजीविका सखी मंडल

"मैं पहले हड़िया बेचती थी तो मेरे पति भी बहुत पीना शुरू कर दिए थे। लेकिन जब से मैने राशन दुकान खोला है उनका पीना भी कम हो गया है और मेरे परिवार की स्थिति सुधरी है एवं सम्मान भी लौटा है।"

अभियान से जुड़कर परिवार को मिला सम्मान

कभी हड़िया–दारू बेचकर अपने परिवार का खर्च चलाने पर मजबूर सुकरी देवी के जीवन को फूलो झानो आशीर्वाद अभियान से नई दिशा मिली है। मजबूरीवश हड़िया–दारू बिक्री से जुड़ी सुकरी आज अपने राशन दुकान की मालकिन है। दुकान का संचालन कर एक तरफ सुकरी अपने गाँव के लोगों की जरूरतों को पूरा कर रहीं है, वहीं अपने परिवार का भी अच्छे से भरण–पोषण करने में सक्षम हुई है। सुकरी के जीवन में बदलाव की बयार का श्रेय जाता है फूलो झानो आशीर्वाद अभियान को। कोडरमा के चंदवारा की रहने वाली सुकरी देवी साल 2018 में सखी मंडल से जुड़ी। गंगा आजीविका सखी मंडल से जुड़कर छोटे–छोटे कई कर्ज लिए। लेकिन हड़िया बिक्री के कार्यों से होने वाले लाभ से ही घर परिवार का खर्च चलता था। सुकरी पारिवारिक स्थिति की वजह से कभी हड़िया बिक्री के कार्य से अलग नहीं हो सकी। सुकरी की कमाई तो ठीक ठाक हो जाती थी लेकिन सम्मान से कोसो दूर थी। लोगों के बीच हड़िया बेचना अपने आप में मुख्यधारा से अलग करता है।

सुकरी देवी बताती है कि एक दिन सखी मंडल की बैठक में मुझे फूलो झानो आशीर्वाद अभियान के बारे में बताया गया। जब मुझे पता चला की इस अभियान अंतर्गत मुझ जैसी महिलाओं को हड़िया निर्माण कार्यों को छोड़कर दूसरे रोजगार से जुड़ने के लिए आर्थिक मदद भी दिया जा रहा है। मैने उसी वक्त खुद को हड़िया बिक्री के कार्यों से अलग करने का मन बना लिया।

मुझे सखी मंडल से करीब 20 हजार रुपये का लोन मिला और मैने अपनी राशन दुकान की शुरूआत की। कमाई तो शुरू में उतनी नहीं थी लेकिन अब मैं महीने का 6 हजार रुपये आराम से कमा लेती हूं। उससे भी बड़ी मेरी कमाई ये है कि मैं पहले हड़िया बेचती थी तो मेरे पति भी बहुत पीना शुरू कर दिए थे। लेकिन जब से मैने राशन दुकान खोला है उनका पीना भी कम हो गया है और मेरे परिवार की स्थिति सुधरी है एवं सम्मान भी लौटा है।

सुकरी बताती है कि "गाँव–घर में हड़िया पीना–पिलाना आम बात है, हमलोगों ने कभी इसके दुसप्रभाव के बारे में ना ही ध्यान दिया और ना ही कभी सोचा। लेकिन धीरे–धीरे अब लोग जागरूक हो रहें है।

पाकुड़

संझलि मुर्मू
गाँव – जमशेरपुर
प्रखण्ड – पाकुड़ सदर
जिला – पाकुड़

"आर्थिक स्थिति खराब होने के वजह से हड़िया बेचने का काम शुरू करना पड़ा था, दिनभर हाट मे बैठने के कारण बच्चों की परवरिश में ध्यान देना भी मुश्किल हो जाता था। लेकिन अब 'फूलो झानो आशीर्वाद अभियान' से जुड़कर और सखी मंडल की मदद से पशुपालन कर अच्छी आमदनी कर रही हूँ"

आजीविका के बहुआयामी साधनों से बदली जिंदगी

पाकुड़ जिला के जमशेरपुर गांव में रहने वाली संझलि मुर्मू पिछले तीस सालों से हड़िया–दारु बेचने का कार्य कर रही थी।

संझलि के परिवार में कुल 7 लोग हैं, इतने बड़े परिवार का भरण–पोषण करना एक बड़ी चुनौती थी। पैसे कमाने के लिए पति को कोलकाता शहर पलायन करना पड़ा, जहां वह दिहाड़ी मजदूरी का काम करते थे। दैनिक जरूरतो की पूर्ति के लिये संझलि को हड़िया बेचकर गुजारा करना पड़ता था। हड़िया–दारू के धंधे से जुड़े रहने की वजह से उन्हे कई तरह की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था, जो ग्राहक हड़िया पीने आते थे वो ही नशे की हालत में संझलि से बुरा बर्ताव करते थे। गाँव के अन्य लोग भी उन्हे सम्मान की नजरों से नहीं देखा करते थे। लेकिन सखी मंडल की महिलाओं ने संझलि को जागरूक किया और रास्ता दिखाया की कैसे वह फूलो झानो आशिर्वाद अभियान से जुड़कर आजीविका के अन्य सम्मानजनक साधनों से जुड़ सकती है।

संझलि बताती हैं कि "आर्थिक स्थिति खराब होने के वजह से हड़िया बेचने का काम शुरू करना पड़ा था, दिनभर हाट मे बैठने के कारण बच्चों की परवरिश में ध्यान देना भी मुश्किल हो जाता था। लेकिन अब 'फूलो झानो आशीर्वाद अभियान' से जुड़कर और सखी मंडल की मदद से पशुपालन कर अच्छी आमदनी कर रही हूँ"।

संझलि ने पशुपालन में हाथ आजमाने की सोची, सखी मंडल से ऋण मिला और प्रशिक्षण भी। पहला ऋण 12,000 रु का लेकर उन्होंने बकरी की खरीददारी की, फायदा दिखा तो वह सुकर पालन भी करने लगी। इस वर्ष संझलि ने बकरियाँ और मुर्गियाँ की बिक्री से 30,000 रु और सुकर बिक्री से 20,000 रु की आमदनी की है। आज संझली मूर्मू के पास 16 बकरिया, 6 शूकर एवं 30 देसी मुर्गिया हैं।

अब संझली की सोच में भी काफी बदलाव आया है, अपने पति को भी गाँव में ही काम मिल सके इसके लिए उन्होंने एक नाश्ता दुकान भी खोला है। उन्होंने पूर्ण रूप से हड़िया–दारू निर्माण का काम छोड़ दिया है और अपने बच्चों की परवरिश पर पूरा ध्यान दे रहीं है।

चतरा

हेवंती देवी

गाँव – मांझीपारा
प्रखण्ड – कुंदा
जिला – चतरा
सखी मंडल – खुशबू सखी मंडल

"मैं चाह कर भी इस कुप्रथा से दूर नहीं हो पा रही थी, फूलो झानो आशीर्वाद अभियान ने मेरी जिंदगी बदल दी। मुझे जीवन में कुछ नया करना का हौसला दिया। मुझे एवं मेरे परिवार को सम्मानजनक जीवन जीने की ऊर्जा भी इसी से मिली"

पशुपालन से बढ़ती आय... सशक्त होती आजीविका

चतरा जिले के कुंडा प्रखंड के मांझीपारा गाँव की हेवंती देवी खुशबू सखी मंडल की सदस्य हैं। आर्थिक तंगी की वजह से हेवंती अपने पति के मदद के लिए हड़िया–दारु बेचने का काम करती थी। इस काम से हेवंती की कमाई महीने में तीन हजार रूपए तक हो जाती थी। हेवंती हड़िया दारू बिक्री व निर्माण से मजबूरीवश जुड़ी थी ताकि घर का गुजारा चल सके। परिवार की चरमराई हुई आर्थिक स्थिति को देखकर वो चाहकर भी हड़िया दारू के कार्यों से दूर नहीं हो पा रही थी।

साल 2020 हेवंती के लिए एक सुनहरा मौका लेकर आया, जब फूलो झानो आशीर्वाद अभियान के अंतर्गत हेवंती को हडिया–दारु छोड़ने का अवसर मिला। हेवंती ने मौके को हाथ से जाने नहीं दिया और अभियान से मिले दस हजार रूपए ब्याज–मुक्त राशि से सुकर और मछली–पालन की शुरुआत की।

आज हडिया–दारु की बिक्री एवं निर्माण कार्य से मुक्त हुए हेवंती को एक साल से ज्यादा समय हो गया है। हेवंती आज महीने का पांच हज़ार रूपए से ज्यादा कमा लेती हैं और इस सम्मानजनक जीवन के लिए झारखण्ड सरकार के फूलो झानो आशीर्वाद अभियान को दिल से शुक्रिया अदा करती है।

हेवंती बताती है कि "मैं चाह कर भी इस कुप्रथा से दूर नहीं हो पा रही थी, फूलो झानो आशीर्वाद अभियान ने मेरी जिंदगी बदल दी। मुझे जीवन में कुछ नया करना का हौसला दिया। मुझे एवं मेरे परिवार को सम्मानजनक जीवन जीने की ऊर्जा भी इसी से मिली।"

गुमला

अनिमा लकड़ा

ग्राम– कराकू

पंचायत– जनवाल

प्रखंड– चैनपुर

जिला– गुमला

समूह– ज्योति आजीविका सखी मंडल

> *"समूह ना सिर्फ बचत करना सिखाता है, बल्कि समूह की सारी दीदियां अपने ही परिवार की सदस्य के भाँति होती है, ना वो अपना कुछ बुरा देख सकती है, ना समूह से जुड़ी किसी अन्य सदस्य की। आज मुझे जो सम्मानजनक व्यवसाय मिला वो मेरी सारी सखी-बहनों की देन है"*

सखी मंडल से सशक्त होती आजीविका

कौन कहता है आसमां में सुराख नहीं होता, एक पत्थर तो तबियत से उछालो यारों... ऐसी ही एक कहानी है गुमला जिला के चैनपुर प्रखंड अंतर्गत जनवाल पंचायत के कराकू गांव की अनिमा लकड़ा की। अनिमा अब सखी मंडल से जुड़कर परिवार के आर्थिक स्थिति सुधारने में आज कामयाब हो रहीं हैं। साल 2018 से ही ज्योति आजीविका सखी मंडल से जुड़ कर आजीविका में सुधार लाने के लिए प्रयासरत थी लेकिन परिवार की आर्थिक तंगी के कारण मजबूरन हड़िया–दारु बेचने पर मजबूर थी।

सखी मंडल की दीदियों ने उन्हें सरकार के कल्याणकारी योजना फूलो झानो आशीर्वाद योजना से अवगत कराते हुए उन्हें हड़िया दारू बेचने छोड़ कुछ सम्मानजनक व्यवसाय की शुरुआत के लिए प्रेरित किया। सखी मंडल की दीदियों के सहयोग से अनिमा को 10 हजार रुपये का ब्याजमुक्त कर्ज मिला और फिर उस राशि से अनिमा ने राशन दुकान की शुरूआत की।

दीदी बताती है समूह ना सिर्फ बचत करना सिखाता है, बल्कि समूह की सारी दीदियां अपने ही परिवार की सदस्य के भाँति होती है, ना वो अपना कुछ बुरा देख सकती है, ना समूह से जुडी किसी अन्य सदस्य की। आज मुझे जो सम्मानजनक व्यवसाय मिला वो मेरी सारी सखी–बहनों की देन है।

अनिमा बताती हैं कि जब वह हड़िया बेचने जाती थीं, तब उन्हें लोगों के बहुत से अभद्र टिपणी और व्यवहार का सामना करना पड़ता था। वह इससे बाहर निकलने के लिए प्रयासरत थीं। अनिमा अब अपने गाँव में आज छोटा सा राशन दुकान चला रही है जिसके जरिए महीने में 12000–15000 रूपये आमदनी से अपने दो बच्चों की पढ़ाई एवं परिवार की आर्थिक स्थिति सुधार करने में सहयोग कर रही हैं तथा परिवार में खुशहाल एवं समाज में सम्मानजनक जीवन व्यतीत कर रहीं हैं। दीदी अपने समूह की सदस्य एवं सरकार की इस कल्याणकारी योजना के प्रति शुक्रगुजार है।

खूँटी

कमला
गाँव – हारासुकू
प्रखण्ड – रनिया
जिला – खूँटी
सखी मंडल – हारासुकू
आजीविका महिला मंडल

"*लोगों के ताने, उनकी गाली-गलौज, रोज की किच-किच से मेरे साथ-साथमेरे बच्चों पर भी बुरा प्रभाव पड़ रहा था। फूलो झानो आशीर्वाद अभियान के जरिए मैं आज सफल उद्यमी के रूप में स्थापित हूँ*"

हड़िया की बिक्री छोड़ कमला बनी सफल उद्यमी

कमला खूंटी, रनिया के हारासुकू गाँव की रहने वाली हैं जो पहले हडिया–दारु बेच कर अपना जीवन यापन करती थी। आर्थिक स्थिति ठीक नही होने की वजह से वह अपने घर पर ही हड़िया बनाने और बेचने का काम करती थी। वह हफ्ते में दो–तीन दिन हड़िया बेच कर 1000 रु. की आमदनी कर लेती थी।

कमला बताती हैं कि, लोगों के ताने, उनकी गाली–गलौज, रोज की किच–किच से मेरे साथ–साथ मेरे बच्चों पर भी बुरा प्रभाव पड़ रहा था.।" फूलो झानो आशीर्वाद अभियान के जरिए मैं आज सफल उद्यमी के रूप में स्थापित हूँ।

फूलो झानो आशीर्वाद अभियान के तहत कमला को हारा सुकू आजीविका महिला ग्राम संगठन के माध्यम से 10 हज़ार रूपए की ब्याजमुक्त ऋण राशि उपलब्ध कराई गई। दारु बेचना छोड़ने से पहले कमला के मन में बहुत से सवाल घूम रहे थे, कमला के लिए यह कमाई का मुख्य स्रोत था। उन्होंने अपने बच्चों के भविष्य की खातिर एक दृढ निर्णय लिया और फूलो झानो आशीर्वाद अभियान से आर्थिक मदद लेकर अपने बिज़नस की शुरुआत की। प्रारंभिक दिनों में वह घर के एक कमरे से ही व्यापार कर रही थीं, उनके गाँव में राशन के लिए कोई प्रतिष्ठान नहीं था, सभी किसी प्रकार की घरेलु समाग्री के लिए रनिया बाज़ार जाना पड़ता था। कम समय में ही कमला ने अपनी दुकान में घरेलु इस्तेमाल की जरुरी चीजों को जोड़ लिया। अब इनके इस दुकान से करीब 6 से 7 हजार रूपए प्रति माह की आमदनी हो रही है। छोटे से कमरे से शुरू हुए इस व्यापार को अब कमला ने अपने परिवार की आजीविका की ढाल के रूप में सींचा है। बढती आमदनी के साथ कमला ने अपने दुकान की तस्वीर भी बदली है। कमला मासिक किश्तों के माध्यम से ऋण वापसी भी कर रही हैं। कमला के मुताबिक़ पिछले एक वर्ष में 65 हज़ार का मुनाफा वो अपने दुकान से कर चुकी है।

फूलो झानो आशीर्वाद अभियान से संवरती जिंदगी

किरण देवी

गाँव – खैरवा

प्रखण्ड – बरहेट

जिला – साहेबगंज

समूह – पार्वती आजीविका सखी मंडल

> *"फूलो झानो आशीर्वाद अभियान के जरिए ब्याजमुक्त कर्ज एवं तकनीकी मदद से मेरी जिंदगी की दिशा बदल गई"*

ग्रामीण क्षेत्रों की हजारों महिलाएं अपनी परिवार की आर्थिक जरूरतों को पूरा करने के लिए हड़िया–दारू का निर्माण एवं बिक्री का काम करती हैं। साहेबगंज जिले के बरहेट प्रखण्ड की खैरवा गाँव की निवासी किरण देवी बताती हैं कि समूह में जुडने से पहले उनके घर की स्थिति काफी खराब थी। देसी शराब और हड़िया बेचकर बड़ी मुश्किल से अपना जीवन यापन करती थी। इतनी आमदनी हो नहीं पाती थी की पेट भरने के अलावा कोई और ज़रूरतें पूरी की जा सके। पर्व, त्योहार,स्वास्थ्य या घरेलू जरूरतों के लिए गाँव के साहूकार पर आश्रित थी, जो 10–15 प्रतिशत के दर पर ऋण देता था। बहुत कठिनाई से जीवनयापन हो रहा था।

पार्वती आजीविका सखी मंडल से जुडने के बाद किरण देवी को फूलो झानो आशीर्वाद अभियान के बारे मे पता चला। यह अवसर किरण के जीवन में नई उम्मीदों को लेकर आया। फूलो झानो आशीर्वाद अभियान के जरिए ब्याजमुक्त कर्ज एवं तकनीकी मदद का भी प्रावधान था। किरण को जरुरत मुताबिक क्षमता वर्धन प्रशिक्षण भी दिया गया, जिससे बेहतर आजीविका से जुड़ने का अवसर मिल सके। किरण ने निर्णय लिया की वह हड़िया–दारू बेचना छोड़कर एक सम्मानजनक आजीविका से जुड़ेंगी। फूलो झानो आशीर्वाद अभियान के अंतर्गत उन्होने 10 हज़ार रुपये का ऋण लेकर एक राशन दुकान शुरू किया। धीरे–धीरे दुकान मे मुनाफा होने लगा। आज वह इस दुकान से महीने मे 5–6 हजार रुपये की आमदनी कमा लेती हैं। आज वह अपने परिवार के साथ एक खुशहाल और सम्मानजनक जीवन व्यतीत कर रही हैं। वह अपने जीवन की इस बदलाव के लिए मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन को धन्यवाद देती है।

सरायकेला

माधवीपूत
गांव – जोरडीहा
पंचायत – जोरडीहा
प्रखंड – खरसावां
जिला – सरायकेला–खरसावां
समुह– तुरो सिंगी सियान मस्कल समूह

"हड़िया-दारू बिक्री का दुष्प्रभाव मैंने बहुत करीब से देखा है इसलिए मैं इस पेशे से निकलना चाहती थी। मजबूरीवश कोई साधन न मिलने से मैं यह कार्य करती थी। मैं अपने सखी मंडल एवं सरकार का धन्यवाद करना चाहती हूं जिन्होनें मुझ जैसी महिलाओं को नई जिदगी दी है"

सफल उद्यमी बनी माधवी पूर्ति

सरायकेला–खरसांवा के जोरडीहा की रहने वाली माधवी पूर्ती की आज अपनी एक अलग पहचान है। कभी हड़िया दारू बिक्री को मजबूर माधवी आज स्थानीय हाट–बाजार में सब्जी की बिक्री करती है और अच्छी कमाई भी कर रही है। माधवी के परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी, हालात ऐसे था कि पति के साथ मजदूरी करने के बाद भी कमाई से घर चला पाना मुश्किल हो गया था। एसे समय में माधवी ने अपने पति के साथ मिलकर हड़िया बनाने एवं बेचने का कार्य शुरू किया था।

तुरो सिंगी सियान मस्कल समूह की सदस्य माधवी पूर्ति हड़िया बेचने का काम तो शुरू की लेकिन रोज होने वाली परेशानियों से वो इस काम को खुशी से नहीं कर रही थी। आय का दूसरा साधन न होने के कारण दीदी का हड़िया बिक्री से जुड़े रहना मजबूरी था।

माधवी पूर्ति को सखी मंडल के जरिए फूलो झानो आशीर्वाद अभियान के बारे में जानकारी मिली। अभियान की पूरी जानकारी लेने के बाद माधवी पूर्ति ने हड़िया–दारू बिक्री के कार्यों से अलग होने का मन बनाया। सखी मंडल की दीदियों ने माधवी को वैकल्पिक आजीविका के बारे में सुझाव दिया एवं तकनीकी मदद भी उपलब्ध कराई। सखी मंडल का साथ मिलने से माधवी पूर्ति ने ब्याजमुक्त कर्ज के रुप में 10 हजार की राशि ली और अपने मन के मुताबिक स्थानिय बाजार में सब्जी बेचने का कार्य शुरू किया। आज माधवी करीब 7 हजार की मासिक आमदनी करती है वो भी पूरे सम्मान के साथ।

माधवी बताती है कि "हड़िया–दारू बिक्री का दुष्प्रभाव मैने बहुत करीब से देखा है इसलिए मैं इस पेशे से निकलना चाहती थी। मजबूरीवश कोई साधन न मिलने से मैं यह कार्य करती थी। मैं अपने सखी मंडल एवं सरकार का धन्यवाद करना चाहती हूं जिन्होनें मुझ जैसी महिलाओं को नई जिंदगी दी है।

सिमडेगा

सोमारी देवी

गाँव – कोम्बाकेरा
पोस्ट – लसिया
पंचायत – शाहपुर
ग्राम संगठन – कोम्बाकेरा
आजीविका महिला ग्राम संगठन
कलस्टर संगठन – कोलेबिरा
आजीविका महिला संकुल संगठन

"फूलो झानो आशीर्वाद अभियान अंतर्गत दीदियों ने मेरी काउंसेलिंग की, जिससे मैने हड़िया दारू बिक्री कार्य को छोड़ने का फैसला लिया और आज मैं एक सुखमय जीवन जी रही हूं वहीं दूसरी दीदियों को भी इस कार्य से अलग रहने की सलाह देती हूं।"

ग्रामीण महिलाओं के लिए मिसाल बनी सोमारी देवी

सिमडेगा के कोलेबिरा की रहने वाली सोमारी देवी आज हड़िया दारू बिक्री से मजबूरीवश जुड़ी महिलाओं के लिए प्रेरणास्रोत हैं। सोमारी के पति की असामायिक मृत्यु के बाद उनके कंधों पर जिम्मेदारी का पहाड़ टूट गया। समय के साथ परिवार की जिम्मेदारी भी बढ़ती गई। समय और हालात से तंग आकर दीदी ने आजीविका के तौर पर हड़िया दारू बनाने एवं बिक्री करने का कार्य शुरू किया। इस काम के माध्यम से उनके घर में आमदनी तो होने लगी लेकिन समाज में सम्मान कम होता गया।

साल 2020 में फूलो–झानो आशीर्वाद योजना का आरंभ किया गया जिसमें ग्राम संगठन से सोमारी देवी को 10,000 रूपये (ब्याज मुक्त) ऋण दिया गया। इस राशि के मदद से सोमारी देवी ने एक छोटा सा होटल खोला। होटल के माध्यम से वह धीरे धीरे व्यापार करने लगीं। पहले दो महीने व्यापार अच्छा नहीं चला लेकिन इसके बावजूद सोमारी ने हार नहीं माना। वह निरंतर मेहनत करते रहीं। दो महीनों के बाद वह अच्छी आमदनी करने लगीं। कुछ ही महीनों में उनके द्वारा पकाए जा रहे व्यंजन लोगों को भाने लगे। बढ़ते खरीददारों के साथ उनकी आमदनी भी बढ़ने लगी। उनको खोया हुआ सम्मान भी मिलने लगा।

सोमारी देवी बताती है कि फूलो झानो आशीर्वाद अभियान अंतर्गत दीदियों ने मेरी काउंसेलिंग की, जिससे मैने हड़िया–दारू बिक्री कार्य को छोड़ने का फैसला लिया और आज मैं एक सुखमय जीवन जी रही हूं वहीं दूसरी दीदियों को भी इस कार्य से अलग रहने की सलाह देती हूं।

सोमारी देवी की इस उपलब्धि को देखते हुए गाँव–घर की अन्य महिलाओं को भी प्रेरणा मिली और उन्होंने भी इस योजना में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया। उनमें से कुछ दीदीयों ने इस फूलो झानो आशीर्वाद अभियान से लाभ लेकर आजीविका के अन्य गतिविधियों से स्वयं को जोड़ना शुरू किया। दीदियों ने पशु पालन, खेती बाड़ी, किराना दुकान, वनोपज का व्यपार करना आदि जैसे आजीविका के श्रोत का चुनाव किया। शाहपुर पंचायत के अन्तर्गत कुल 15 दीदियों को अभी तक इस योजना से जोड़ा जा चुका है। सोमारी देवी के अथक प्रयासों से फूलो झानो आशीर्वाद अभियान अपने मकसद में सफल होता दिख रहा है।

गोड्डा

ललिता देवी

गाँव – धरनीचक

प्रखण्ड – ठाकुर गंगटी

जिला – गोड्डा

समूह का नाम – सिकियम आजीविका सखी मंडल

"फूलो झानो आशीर्वाद अभियान की जानकारी मिली और योजना के तहत मिलने वाली ब्याज मुक्त ऋण से मुझे नई जिंदगी मिली"

जिंदगी को मिली नई दिशा

गोड्डा जिले के ठाकुर गंगटी प्रखण्ड के धरनीचक गाँव की रहने वाली ललिता देवी अपने परिवार के पालन पोषण के लिए हि.ड़या दारू बना कर हाट बाजारों में बेच कर तथा मजदूरी करके अपना आजीविका चलाती थी। उनके परिवार में छः सदस्य हैं। इस काम से परिवार को पालने में बहुत कठिनाई का सामना करना पड़ता था जिससे खाने पीने के अलावा बच्चों को अच्छी शिक्षा नहीं दे पा रहा थीं।

सिकियम आजीविका सखी मंडल से जुड़ने के बाद, वह समूह से छोटी–छोटी ऋण लेकर घरेलू खर्च में उपयोग करती थी। उन्हे ऋण मे ली हुई राशि को चुकाने में बहुत कठिनाई होती थी। वर्ष 2020 में जेएसएलपीएस द्वारा चलाये गए फूलो झानो आशीर्वाद अभियान की जानकारी मिली और योजना के तहत मिलने वाली ब्याज मुक्त ऋण की भी जानकारी मिली। उन्होने हड़िया–दारू बेचना छोड़ने का निर्णय लिया और एक सम्मानजनक आजीविका से जुड़कर अपने परिवार की आर्थिक स्थिति सुधारने का निर्णय लिया। समूह से 10 हज़ार रुपये का ऋण लेकर उन्होने बकरी पालन शुरू किया। साथ ही बकरी पालन का प्रशिक्षण भी लिया। उन्होने उस राशि से अच्छे नस्ल की दो बकरियां खरीदी। सात माह मे बकरियों ने चार बच्चे दिए। बकरियों को बड़ा करने बेचने मे उन्हे लगभग 18–19 हज़ार रुपये का मुनाफा हुआ। इस तरीके से बकरी पालन और मजदूरी कर ललिता देवी अपनी आजीविका बढ़ा रही हैं। हड़िया–दारू बेचना छोड़ कर, इस सम्मानजनक कार्य से जुड़ वह बहुत खुश हैं एवं समाज मे उनकी इज्ज़त बढ़ गयी है। उनके परिवार के सदस्य भी इस कार्य से खुश हैं और इस व्यवसाय मे उनका सहयोग करना चाहते हैं।

धनबाद

बहामुनी मंझीयान

पति – स्व0 लीला मुर्मू
ग्राम – करमागोड़ा,
पंचायत – उदयपुर,
थाना – गोविन्दपुर
जिला – धनबाद

"फूलो झानो आशीर्वाद अभियान ने मुझे हड़िया-दारू कार्यों से मुक्त होने का हौसला दिया और आज मैं एक सफल उद्यमी के रूप में जानी जाती हूँ"

फूलो झानो अशीर्वाद अभियान से बहामुनी हुई आर्थिक रूप से सशक्त

बहामुनी मंझीयान एक गरीब आदिवासी परिवार से आती है जो धनबाद जिला के गोविन्दपुर प्रखण्ड के छोटे से गांव करमागोड़ा मे अपने परिवार के साथ रहती है।

इनके परिवार मे पति लीला मुर्मू दैनिक मजदूरी कर एक मात्र कमाने वाले सदस्य थे। बहामुनी के पति का देहांत बीमारी के कारण साल 2012 में हो गया। जिसके बाद बहामुनी के घर में आर्थिक संकट गहरा गया। ऐसे में बहामुनी को हड़िया दारू बिक्री कर जीवन यापन का एक मात्र रास्ता दिखा। इन परिस्थितियों को देख बहामुनी मंझीयान घर मे ही हड़िया दारू बना कर बेचना शुरू कर दी। इन कार्यो से बहामुनी को कुछ आय होता था जिससे घर का खर्च चल जा रहा था। समाज और आस पड़ोस के लोग उनके परिवार के प्रति इज्जत से नही देखते थे जिससे उनको शर्मिंदगी भी महसुस होने लगी थी। वह हड़िया दारू का काम छोड़ कर किसी अन्य काम से जुड़ना चाहती थी लेकिन विकल्प के अभाव में कुछ नहीं कर पा रही थी।

बहामुनी की साल 2020 में फूलो झानो अभियान के बारे मे पता चला। सरकार के इस अभियान का मानो बहामुनी का सालों से इंतजार था। फिर क्या था, बहामुनी ने समूह से ऋण लेकर अपना राशन दुकान शुरू किया। आज वो एक सफल उद्यमी है और रोजाना 300–400 रूपये कमा लेती है।

बहामुनी बताती है कि फूलो झानो आशीर्वाद अभियान ने मुझे हड़िया–दारू कार्यों से मुक्त होने का हौसला दिया और आज मैं एक सफल उद्यमी के रूप में जानी जाती हूँ।

Jharkhand State Livelihood Promotion Society

झारखण्ड स्टेट लाईवलीहुड प्रमोशन सोसाईटी

ग्रामीण विकास विभाग, झारखण्ड सरकार

www.jslps.org @onlinejslps facebook.com/onlineJSLPS online.jslps